रात का गीत (1 मार्च)

गिनती 23:10 …मेरी मृत्यु धर्मियों की सी, और मेरा अन्त भी उन्हीं के समान हो!

हमारे प्रभु यीशु धार्मिक थे, और हम जब भी मृत्यु के बारे में सोचें, हमें उनके बारे में और उनकी मृत्यु के बारे में सोचना है, और ये याद रखना है कि जैसे उन्होंने अपना जीवन बलिदान कर दिया, हमें भी चाहिए कि हम भाइयों की ओर से अपना जीवन भी बलिदान कर दे। जैसे प्रभु यीशु ने संसारिक हितों, फायदों और विशेषअधिकारों और सुखों का बलिदान कर दिया ताकि वे दिव्य योजना के अनुसार बलिदान की मौत मर सके। उसी तरह आओ हम याद रखे की हमने भी इसी तरह 'यीशु की मृत्यु' का बपतिस्मा लिया है (रोमियों 6:3), इसलिए यदि हम मसीह के साथ मर गए, तो हमारा विश्वास यह है कि उसके साथ जिएंगे भी (रोमियों 6:8), यदि हम धीरज से सहते रहेँगे, तो उसके साथ राज्य भी करेंगे। (2 तिमोथियस 2:12) क्योंकि यदि हम उसकी समानता में जी उठने की आशा रखते है, तांकि महिमा, आदर और अमरता पाएं, तो इस आशा का आधार है हमारा उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट जाना, और वफ़ादारी दिखाना जिसका मतलब हुआ, अभी के समय में मसीह के कष्टों में सहभागी होना। लेकिन हम जो मूसा की तरह 'पिसगा' पर खड़े होकर (व्यवस्थाविवरण 34:1) हमारे सामने रखे दृश्य या आशा को देख रहे हैं, हमें अपने भितरी मनुष्यत्व की सामर्थ्य को देखकर मजबूत बनना है।

हम क्यों मौत या इससे जुड़े दुखों को देखकर डरें? नहीं! हम तो इन सब बातों में आनन्दित होंगे और हमारा प्रभु और उध्दारकर्ता, हमारे सिर के द्वारा विजय पाएंगे। Z'07-269 R4055:5 (Hymn 325) आमीन

रात का गीत (2 मार्च)

यूहन्ना 6:35 यीशु ने उनसे कहा, "जीवन की रोटी मैं हूँ: जो मेरे पास आएगा वह कभी भूखा न होगा...।"

केवल हमारे प्रभु, उनके लहू के मोल, और उनके अनुग्रह की व्यवस्था पर बड़े पैमाने में नियमित, प्रतिदिन भाग लेने के द्वारा ही हम उनमें मजबूत हो सकते हैं और वफ़ादारी से सफर को जारी रख सकते हैं और आत्मिक कनान में प्रवेश कर सकते हैं। जैसे हर इस्राएली को खुद के लिए मन्ना इकट्ठा करना आवश्यक था, उसी प्रकार हर मसीही को सच्चाई इकट्ठा करके उसे अपनाना आवश्यक है। हमें अपना कर्तव्य आत्मिक क्षेत्र और साथ ही सांसारिक क्षेत्र में जरूर से पूरा करना चाहिए। पवित्र आत्मा के अनुग्रहों की पूर्णता की उम्मीद बिना तैयारी के नहीं की जा सकती। इसके लिए शुरू में रोपण, छंटाई और खेती की तैयारी करना जरूरी है। किसी ने सही कहा है, "कॉलेज में रहने से कोई विद्वान नहीं बन जाता और चर्च में एक बेंच पर बैठने से कोई मसीही नहीं बन जाता"। प्रभु में मजबूत होने के लिए और उनके पराक्रम की शक्ति में मजबूत होने के लिए हमें अवश्य खुद को प्रतिदिन खिलाना चाहिय-- हमे प्रतिदिन उनके बलिदान

के मूल्य को अपनाना चाहिए और उसकी सराहना करनी चाहिए। Z'13-218 R5279:4 (Hymn 189) आमीन

रात का गीत (3 मार्च)

लूका 12:32 हे छोटे झुण्ड, मत डर; क्योंकि तुम्हारे पिता को यह भाया है, कि तुम्हें राज्य दे।

मसीह के चेले होने के नाते हमारी मुख्य दिलचस्पी परमेश्वर के राज्य 'में' अपने प्रिय उद्धारकर्ता के साथ हिस्सेदार होना चाहिए। हजार साल के राज्य में यीशु की दुल्हन बनकर, उनके महिमा के भरे सिहांसन में बैठकर पूरी मानवजाति को आशीष देने और सुधारने में हिस्सेदार हो पाएँ, ये हमारी मुख्य चिन्ता होनी चाहिए। हमें हमारे गुरु यीशु का आश्वासन भी है कि, जो भी इस मार्ग की और बढ़ेगा वो बुद्धिमानी से सब करेगा, और उसके सर्वोत्तम कल्याण के लिए परमेश्वर उसके सांसारिक हितों का ध्यान रखेगें। ऐसा करते रहने से, हमारा जीवन शान्ति और आनन्द और प्रभु यीशु में विश्राम का मुकुट पाएगा, जिसका वादा उन्होंने वचनों में उनके लिए किया है जो उसपर भरोसा रखते हैं। Z'10-73 R4567:5 (Hymn 8) आमीन

रात का गीत (4 मार्च)

मत्ती 28:20 ...और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं॥

यह वचन एक बहुमूल्य ख्याल देता है - कि हमारे प्रभु यीशु मसीह अपने प्रतिनिधियों के साथ हमेशा से रहें हैं, उनके सभी परिश्रम में, प्रेम और स्वयं से इन्कार करने में, इस पूरे युग में (सुसमाचार के युग में), और हमारे साथ रहकर प्रभु यीशु हमारे सभी प्रयत्नों को लिख रहें हैं, देख रहें है, हमें सहारा दे रहे हैं, हमें प्रोत्साहन दे रहें हैं, हमें थाम कर रखतें हैं, सम्भालते हैं और जिसके भी जीवन में मुख्य कार्य परमेश्वर की सेवा करना है, परमेश्वर के अनुग्रह को दूसरों के साथ बाँटना है- उन सभी लोगों को प्रभु यीशु तरोताज़ा करते हैं, उन्हें पानी देते हैं, भोजन देते हैं। (आत्मिक भोजन, जीवन का जल) और जब ये बात इस पूरे सुसमाचार के युग में सही हो रही है तो अभी अन्त के समय में जबकि प्रभु यीशु दुबारा आ चुकें हैं, हमें सचमुच में ये महसूस करना चाहिए कि अभी कटनी के समय में खासकर प्रभु यीशु मसीह हमारे साथ हैं । प्रभु यीशु हमारे साथ हैं ये हम कैसे महसूस कर सकते हैं - उनकी सहानुभूति के द्वारा, उनकी मदद के द्वारा, उनकी सहायता के द्वारा, अनुग्रह को बनाये रखने के द्वारा, हमारे सभी अनुभवों को वे हमारे लाभ में बदल देते हैं और हमें परमपिता परमेश्वर जिन्होंने हमे अन्धकार से निकालकर अदभुत ज्योति में लाया है, उनकी महिमा करने के लिए उपयोग में लातें हैं। इन सभी अनुग्रहों को जो प्रभु यीशु के द्वारा हमे मिल रहें है, पहचान कर हम, प्रभु यीशु हमारे

साथ हैं, इस बात को हम महसूस कर सकते है। Z'03-91 R3166:6 (Hymn 226) आमीन

रात का गीत (5 मार्च)

यूहन्ना 15:5 मैं दाखलता हूं: तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उस में, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।

केवल यही काफी नहीं कि हम राज्य के संदेशों को सुने; केवल यही काफी नहीं कि हमारे इरादे या दिल इस सुसमाचार के प्रति अच्छे हों; बल्कि इसके अलावा ये भी जरूरी है, जैसा कि हमारे गुरु यीशु कहते है, हमें राज्य के सन्देशे को समझना भी होगा, इसीलिए बाईबल की पढ़ाई की जरूरत है। बुद्धिमान लोगों का यह मानना है कि कुछ सालों के धरती के जीवन के लिए बहुत साल का समय उसकी तैयारी और पढ़ाई में देना सही है और इसी में बुद्धिमानी है। तो फिर, हमें अनन्त जीवन और राज्य की आशीषों की तैयारी के लिए कितना पढ़ना चाहिए और कितना समय देना उचित होगा ? इसलिये राज्य में जाने के लिए चरित्रनिर्माण में जो समय और प्रयत्न लग रहा है, उसे बुद्धिमानी से लगाना है। मत्ती 13:8 वचन के दृष्टान्त में सौ गुना, साठ गुना और तीस गुना फल लाना हमारे उत्साह की तीव्रता के अंश को बताता है । राज्य में इनाम भी हमें इसी अनुपात में मिलेगा जिस अनुपात में हमारा उत्साह होगा। एक तारे से दूसरे तारे के तेज में अंतर है। इसी तरह से मरे हुओं के पुनरुत्थान में भी अंतर है।

राज्य में अलग अलग अंश में महिमा का तेज होगा, लेकिन फिर भी जो किसी अच्छी मात्रा में फल न लाए, उसे पिता स्वीकार नहीं करेंगे, "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे में प्रसन्न हूँ" ये आवाज उन्ही के लिए आएगी जो योग्य होंगे । Z'10-203 R4635:5 (Hymn 49) आमीन

रात का गीत (6 मार्च)

1 यूहन्ना 2:1 …पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात धार्मिक यीशु मसीह।

हमें एक वकील की जरूरत क्यों है? यघपि हमारी नई सृष्टि किसी भी दोष से स्वतंत्र है और पिता के साथ पूरा रिश्ता बना चुकी है, और "जरूरत के समय का अनुग्रह पाने के लिए उनके सिहांसन के पास जा सकती है, ताकि जरूरत के अनुसार अनुग्रह और दया पा सकें" लेकिन फिर भी हमारी नई सृष्टि के पास नई आत्मिक देह नहीं है और जब हमारा पहला पुनरुत्थान होगा तभी हमें नई देह मिलेगी। इस बीच में, दिव्य व्यवस्था के अनुसार, अभी हमें अपनी शरीरिक देह को उपयोग में लाना है, जिसे हम और हमारे परमेश्वर दोनों जानते हैं कि ये शारीरिक देह अपरिपूर्ण है। क्योंकि हम लोग अपने शारीरिक देह के द्वारा कार्य करते है, और "हम जो चाहते है वो नहीं कर सकते" क्योंकि "हमारी देह में कुछ भी परिपूर्णता नहीं"। लेकिन यदि हम अपने शारीरिक देह की कमजोरियों या नादानियों के कारण गलतियां करें, तो दिव्य व्यवस्था के अनुसार हमारे लिए एक वकील है, जिनका छुड़ौती का बलिदान हमारे ऊपर लागु होता है और वो

हमारी गलतियों के लिए खड़े होकर जो कि हमने अनजाने में की है, हमें पिता की नजर में बिना किसी दाग या सिलवट के खड़े करेंगे। Z'09-347 R4516:6 (Hymn 141) आमीन

रात का गीत (7 मार्च)

इब्रानियों 11:30 विश्वास ही से यरीहो की शहरपनाह, जब सात दिन तक उसका चक्कर लगा चुके तो वह गिर पड़ी।

मैं मसीह की सामर्थ्य से सब कुछ कर सकता हूँ। विश्वास का होना अनिवार्य है। लेकिन इसके पहले कि हम अपने प्रभु के द्वारा हमारे 'यरीहो' पर विजय पाने का वादा पाएँ या फिर इसके पहले कि हम अपने विश्वास का अभ्यास करके वह विजय पाएँ, हमें ओर भी बहुत कुछ करना है विश्वास के इस स्तर तक पहुँचने से पहले -

1. हमें यरदन को पर करना है,

2. हमें पापों की क्षमा लेनी है,

3. हमें असलियत वाले फसह के पर्व में हिस्सा लेना है,

4. हमें पवित्र कार्य के लिए अलग होना है।

जब हम यरदन नदी को पार करके, पापों की क्षमा पाकर, फसह में शामिल होकर, पवित्रता में बढ़कर, उसके बाद विश्वास का अभ्यास करेंगे तभी हमें प्रभु से जय पाने की आशीष मिलेगी और हम जय पा सकेंगे। यदि छाया

में केवल विश्वास ने शहरपनाह की दिवार को गिरा दिया तो असलियत में विश्वास क्या कुछ कर सकता है; (1 यूहन्ना 5:4) "यह विजय जिससे संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है"। लेकिन हम इस जय पाने वाले विश्वास का अभ्यास तभी तक कर सकते हैं जब तक हमें परमेश्वर पर भरोसा है और हम परमेश्वर को प्रसन्न करने की वस्तुओं की खोज में रहते है। Z'02-301 R3088:4 (Hymn 174) आमीन

रात का गीत (8 मार्च)

यहोशू 1:6 इसलिये हियाव बान्धकर दृढ़ हो जा...।

साहस हमेशा प्रशंसनीय है, लेकिन शरीरिक साहस की तुलना में नैतिक साहस का पद ऊँचा होना चाहिए। परमेश्वर के लोगों में इस नैतिक साहस की बहुत ज्यादा जरूरत है; इसके बिना वे कुछ भी नहीं कर सकते और उनके मसीही जीवन में बहुत सारी परेशानियाँ इसलिए आती है क्योंकि वे इस मामले की कदर करने में असफल हो जातें है और इस साहस को बढ़ाने में असफल हो जातें है। परमेश्वर की सच्चाई के लिए खड़े रहने के लिए परमेश्वर के लोगों को उच्चतम स्तर का साहस चाहिए होता है, खासकर तब जब सच्चाई और परमेश्वर के लोगों को गलत समझा जाता है, गलत अर्थ लगाया जाता है और उनका विरोध किया जाता है। रोशनी के लिए खड़े होने के लिए सचमुच का साहस चाहिए होता है खासकर जब शैतान पूरी दुनिया को प्रभावित कर देने वाले प्रभाव से रोशनी को अन्धकार बना देता है जिसकी वजह से रोशनी की तीखी आलोचना होती है। जब

अन्धकार की तरफ दौलत, संस्कृति, प्रभुता और नोमिनल चर्च की व्यवस्था होती है तब नम्रता के साथ उस अन्धकार की निन्दा करने के लिए सचमुच के साहस की जरूरत होती है। Z'07-283 R4062:1 (Hymn 261) आमीन

रात का गीत (9 मार्च)

रोमियो 5:5 ...पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है।

परमेश्वर हमसे इसलिए प्रेम नहीं करते क्योंकि हम बहुत ही महान और बढियां कार्य कर रहे है। उनका हमारे लिए खास प्रेम तब शुरू हुआ जब उन्होंने हमें उत्पन्न किया, क्योंकि हमने समर्पण किया, क्योंकि हमने उनके साथ बलिदान की वाचा बांधी। और परमेश्वर उन सभों से आनन्दित होतें हैं जो उनकी आत्मा की मुहर लगवाना चाहते हैं -- जो उनके बच्चे बनना चाहते हैं। इसलिए उन्होंने हमें तब से प्रेम करना शुरू किया जब हम बालक ही थे, और जैसे-जैसे हम मजबूत बनते जाते हैं वे हमें प्रेम करते जातें है और वे हमें अन्त तक प्रेम करते रहेंगे ! . . . जैसे-जैसे हम एक छोर से दूसरे छोर तक का सफर तय करते जायेंगे, हमारे लिए परमेश्वर के प्रेम में बने रहना जरूरी है। जब हम दूध पीते बच्चे हों, या बालक हों या और भी बढ़ जाएँ, हमें परमेश्वर के प्रेम में बने रहना जरूरी है। ऐसा हम कैसे कर सकते हैं? (परमेश्वर के प्रेम में बने रहने के लिए हमें क्या करना है?) उनकी आज्ञाओं को मानना है। इसलिए हमें इस देह

को मसीह में परमेश्वर की परिपूर्ण मर्जी के आधीन कर देना है। जो भी ऐसा करता है, वो खुद को बढ़ते हुए पाता है। दिन पर दिन हमें बढ़ना है और बढ़ोतरी करनी है और ज्यादा से ज्यादा परमेश्वर के जैसा बनते जाना है; ताकि जैसे जैसे दिन बितें हम ज्यादा से ज्यादा बदलते जाएँ। इसलिए हमें खुद को परमेश्वर के प्रेम में बनाए रखना है। Z'13-214 R5276:2 (Hymn 165) आमीन

रात का गीत (10 मार्च)

याकूब 5:7,8 ...देखो, गृहस्थ पृथ्वी के बहुमूल्य फल की आशा रखता हुआ प्रथम और अन्तिम वर्षा होने तक धीरज धरता है। तुम भी धीरज धरो...।

धीरज एक सद्गुण है जिसे हमारे स्वर्गीय पिता हम में पैदा करना चाहते हैं और इसका भव्य उदहारण वे स्वंय में ही प्रगट करते हैं। पिछले सभी सदियों में उन्होंने उन सभी की निन्दाओं को धीरज से सहा है जो, "उनके ज्ञान के मार्ग में न्याय को पूरा करने और उनके अनुग्रह से भरे गहरी योजनाओं को पूरा करने" को समझने में असफल हो गए और परमेश्वर के सचमुच में तेजस्वी और पवित्र चरित्र पर बुराई और केवल बुराई का दोष लगाते हैं। परमेश्वर जानते हैं कि "ठीक समय पर" उनका चरित्र पूरी तरह से दोषमुक्त हो जायेगा और इसलिए वे धीरज से इन्तज़ार कर रहे हैं और कार्यों को कर रहे हैं और सह रहे हैं। इसी प्रकार से हमारे प्रभु यीशु भी इन्तज़ार कर रहे हैं और धीरज से सह रहे हैं। हमारी निम्न दशा में आने में प्रभु यीशु ने बहुत अनादार सहा। उसके बाद, जब वो मनुष्य

थे उन्होंने अपने विरुद्ध पापियों का विरोध और कृतघ्नता से सताया जाना, धीरज से सहा, प्राण देने तक उनसे जिन्हें वो बचाने आये थे। और अपने स्वर्गीय पिता की तरह इन सब में भी वे आनन्दित रहे थे, ये सोचते हुए की "ठीक समय में" जब की वो समय बहुत दूर भविष्य में था, उनका चरित्र और उनके पिता का चरित्र पूरी तरह से दोषमुक्त हो जाएगा और स्वर्ग में और स्वर्ग में और पृथ्वी पर की सारी सृष्टि पर प्रगट हो जाएगा। और अभी तक हमारे धन्य प्रभु यीशु और प्यारे स्वर्गीय पिता उस भव्य समाप्ति का धीरज से इन्तज़ार कर रहे हैं। इसलिए, उन्हीं के समतुल्य मन के नज़रिये से हमें भी अवश्य इन्तज़ार करना चाहिए; "क्योंकि दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता" (यहून्ना 15:20) और यदि हममें मसीह का मन है तो भविष्य की और देखते हुए हम ना केवल अपनी दोषमुक्ति और महिमा की अपेक्षा में आनन्दित होंगे, बल्कि परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु की दोषमुक्ति और महिमा की अपेक्षा में और सच्चाई और धार्मिकता के विजय की अपेक्षा में भी आनन्दित होंगे। Z'06-165 R3784:1 (Hymn 29) आमीन

रात का गीत (11 मार्च)

गलातियों 4:28 हे भाइयो, हम इसहाक की तरह प्रतिज्ञा की सन्तान हैं।

मसीह, जो हमारे सिर हैं और हम जो उनके अंग है, दोनों मिलकर उनके प्रतिरूप हैं जो "हँसी" या आनन्दमय कहलाते हैं (यानि इसहाक) और क्या, यहाँ तक की अभी के समय में हमारे पास दूसरों से अधिक आनन्द नहीं है? ये सच है कि उन परिक्षाओं और परेशानियों और शोक और निराशाओं में हमारी पूरी हिस्सेदारी है, जिससे सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है, फिर भी हमारे पास वो है जो उनके पास नहीं है - "परमेश्वर की शान्ति जो सारी समझ से परे है", हमारे हृदयों में राज्य करती है और हमें क्लेश में भी आनन्दित रहने की सामर्थ्य देती है, ये जानकर कि क्लेश से धीरज उत्पन्न होता है और नाना प्रकार के आत्मा के फल उत्पन्न होते है, जो, जब हममें सिद्ध हो जायेंगे तब हमें उस स्वर्गीय राज्य के पूरे आनन्द और हर्श के निकट ले आएंगे। और यदि यह नाम, "आनन्दमय" अभी के समय में हम पर, इतने ज्यादा में लागू होता है, तो हम उस महिमामय भविष्य के बारे में क्या कहें, जब हम अपने स्वामी के साथ उनके राज्य की महिमा में सहभागी होकर, हम प्रभु के ज्ञान और आशीष से पूरी पृथ्वी को भरने का कारण होंगे, और मानवजाति की दुनिया के लिए, जो की अभी के समय में पाप और मृत्यु की अवस्था के अन्तर्गत कमजोर है और कराह रही है, खुशियां और आनन्द लेकर

आएंगे। "परमेश्वर की स्तुति हो जिनसे सारी आशीषें बहती है”। Z'01-263 R2861:5 (Hymn 27) आमीन

रात का गीत (12 मार्च)

व्यवस्थाविवरण 8:2 और स्मरण रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा उन चालीस वर्षों में तुझे सारे जंगल के मार्ग में से इसलिये ले आया है, कि वह तुझे नम्र बनाए, और तेरी परीक्षा करके यह जान ले कि तेरे मन में क्या क्या है, और कि तू उसकी आज्ञाओं का पालन करेगा या नहीं।

यहाँ पर एक खास कारण है की परमेश्वर ने अपने समर्पित लोगों को सताए जाने की अनुमति क्यों दी है? "तेरा परमेश्वर यहोवा तेरी परिक्षा करता है", तुम्हें परखता है। क्यों? परमेश्वर हममें क्या परख रहे है? हम ये जताते हैं कि हम परमेश्वर के वफादार बच्चे हैं। हम ये जताते हैं कि हमने वो सब कुछ जो हमारे पास है, परमेश्वर के लिए रख दिया है। और अब, "तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारी परिक्षा लेगा, जिससे यह जान ले की ये मुझसे अपने सारे मन और सारे प्राण के साथ प्रेम रखते हैं या नहीं? (व्यवस्थाविवरण 13:3) तुम कितना सह सकते हो? तुम कितना धीरज से सह सकते हो? तुम किस हद तक सह सकते हो? वे जो सबसे ज्यादा सहेंगे और सबसे ज्यादा धीरज से सहेंगे, वे ही सर्वोत्तम चरित्र का प्रमाण देंगे। और वे जो सर्वोत्तम चरित्र का प्रदर्शन करेंगे, उन्हें राज्य में सर्वोच्च स्थान मिलेगा। प्रत्येक जन को उसकी सच्चाई के अनुसार स्थान मिलेगा। लेकिन जैसे एक तारे से दूसरे तारे के तेज में अन्तर है, वैसा ही

राज्य में भी होगा। वे जो अपने स्वभाव के विरुद्ध सबसे बड़ी लड़ाई लड़ते हैं और सबसे अधिक अपने हृदय के प्रेम और जोश का प्रदर्शन करते हैं, वे ही उनमें से एक होंगे जिन्हे सर्वोच्च स्थान मिलेगा। Z'14-40 R5395:6 (Hymn 331) आमीन

रात का गीत (13 मार्च)

2 कुरिन्थियों 2:11 कि शैतान का हम पर दांव न चले, क्योंकि हम उसकी युक्तियों से अनजान नहीं।

शैतान, जो की कलीसिया का विरोधी है, बहुत मजबूत और शेर की तरह है, सतर्क है और पूरी तरह से जागा हुआ है। जैसा कि प्रेरित पौलुस ने घोषणा की है, शैतान हमारे खिलाफ हर अवसर का उपयोग करना चाहता है। वह प्रतीक्षा में है, हमें खा जाने के लिए। हालाँकि वह सतर्क है, तब भी शैतान कभी भी हमारे सामने शेर जैसे दहाड़ते हुए नहीं आता, पर वो वैसे समय और जगह में जिससे से हम अनजान हैं, चोरी छिपे हमको खाने के लिए, हम पर विजय पाने के लिए, हमारे आत्मिक जीवन को नष्ट करने के लिए, और खासकर हमारे विश्वास को नष्ट करने के लिए, वो हम पर वार करता है। इसलिए केवल जिनके कान शेर के पैरों के चलने की आवाज़ का पता लगाने के लिए प्रशिक्षित किये गए हैं, वे ही उसके कदमों की आहट को सुनेंगे, पर जो उसकी आदत से अनजान हैं, वे उसकी आवाज जरा सी भी नहीं सुनेंगे। इसलिए हम, जिनकी समझ के कानों को प्रभु ने खोला है, और जिनकी आँखों का अभिषेक प्रभु की इच्छा

के प्रति समर्पण और अधीनता की मलहम से किया गया है, उन्हें फुर्ती से हमारे प्रधान शत्रु के आगमन के संकेत को समझ जाना है और परमेश्वर के अधीन होकर उसका सामना करना है। आइए हम परमेश्वर के वचनों से मिले सभी हथियारों को पूरी तरह से पहनकर, उनकी सामर्थ्य में आत्मा की तलवार को चलाते हुए दृढ़ता से खड़े रहें। Z'13-54 R5183:6 (Hymn 183) आमीन

रात का गीत (14 मार्च)

1 शमूएल 7:3 …यहोवा की ओर अपना मन लगाकर केवल उसी की उपासना करो…।

प्रिय भाइयों और बहनों, आओ हम सब, जिन्हें आने वाले राज्य की सूचना देने के राजदूत बनने का विशेष अधिकार है, 'यूहन्ना - बपतिस्मा देने वाले' की तरह उत्साह से भरे रहें, जोशीले रहें, और हमें जिस कार्य के लिए नियुक्त किया गया है उसका बहुत ध्यान से ख्याल रखें और दुनियां के रीती रिवाजों पर परमेश्वर के इस कार्य की तुलना में बहुत कम ध्यान दे। हमें ध्यानपूर्वक अपने कार्य को करते जाना है, हमारे स्वर्गीय दूल्हे की प्रशंसा करते जानी है, सभी के बीच में उनके बारे में ऐलान करना है, प्रभु यीशु से समर्थन पाने की सभी शर्तों की जानकारी सबको देनी है और कटनी के समय में अभी के युग में उनकी उपस्थिति की गवाही देनी है। हमें भी ये गवाही देनी है कि प्रभु यीशु का सूप उनके हाथ में है, और वह अपना खलिहान अच्छी रीती से साफ़ करेंगे, और अपने गेहूँ को अपने खत्ते

में इक्क्ठा करेंगे, परन्तु भूसी को उस आग में जलांयेंगे जो बुझने की नही, (मत्ती 3:12 वचन)। प्रभु यीशु मसीह अभी के युग में कटनी के इस समय में उपस्थित हैं और गेहूँ को अपने राज्य के खत्ते में इक्क्ठा कर रहें है और बड़ी मात्रा में जो 'नाम के मसीही हैं', वे लोग जल्द ही बहुत बड़े संकट के समय में प्रवेश करेंगे। यदि हम एलाइजा की तरह पर्दे के इस पार, इस सेवा के कार्य को वफ़ादारी से करेंगे, तो पर्दे के उस पार अभिषेक किये हुए मसीह की देह के सदस्य के रूप में स्वीकारे जाने के लिए सुरक्षित महसूस कर सकते हैं, और इस प्रकार से अभी के समय के कष्टों में हिस्सा लेतें रहे और भविष्य में मिलनेवाली महिमा और गौरव के भी भागी हो जाएँ। Z'06-31 R3713:4 (Hymn 255) आमीन

रात का गीत (15 मार्च)

मत्ती 7:14 …सकेत है वह फाटक और कठिन है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है; और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं॥

क्या यह रास्ता बहुत सकेत नहीं है? जी हां, यह रास्ता इतना सकेत है की, केवल प्रभु की योजना इस रास्ते में प्रवेश कर सकती है, और जो लोग इच्छुक हैं, उन्हें बाकि सब योजनाओं, परियोजनाओं और सवालों को त्याग कर, अपने पूरे समय को परमेश्वर की सेवा में समर्पित कर देना है; और जो लोग इच्छुक हैं काफ़ी हद तक, कोई भी निन्दा को सहने के लिए जिसका सामना उनको करना पड़े। क्या आप दिन-प्रतिदिन परमेश्वर के दिव्य चरित्र को पहचानने और परमेश्वर के धर्मी तरीकों को जानने का

प्रयास कर रहे हैं? क्या आप परिश्रम से अपने आप को सच्चाई से पूरी तरह से परिचित करने के लिए अध्ययन कर रहे हैं, ताकि आप वास्तव में एक जीवित पुस्तिका बन सके, उन सब के लिए जो आपको जानते और पहचानते हैं और जो आपके प्रभाव के अन्दर हैं? क्या आप वास्तव में एक ऐसे कारीगर हैं जिन्हें लज्जित होने की ज़रूरत नहीं है? क्या आप उन लोगों में से हैं जिन्होंने वास्तव में खुद को प्रभु को समर्पण किया है, और उनको सच्चाई से कह रहे हैं: "मेरे को ले लें -- मैं सदा के लिए, केवल, आपके लिए हूँ "? अगर ऐसा है तो, आप की सोच इतनी सकरी है की आप ये कह सकते हैं, "केवल यह एक काम करता हूं;" और मैं परमेश्वर की स्तुति को दिखाने के लिए हर एक चीज को झुकता हूं और दूसरों की सहायता करता हूँ ताकि वे भी परमेश्वर की अद्भुत ज्योति में आ जाएँ; और इसके अंत तक, मैं अपने हर एक हुनर को जो मेरे पास है उसको बढ़ा सकूँ अपने स्वर्गीय पिता के एक बुद्धिमानी भण्डारी के रूप में। Z'12-194 R5045:3 (Hymn 277) आमीन

रात का गीत (16 मार्च)

कुलुस्सियों **3:3** क्योंकि तुम तो मर गए**,** और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है।

किसी मसीही लेखक ने सही कहा है कि: "जहां कहीं भी एक मसीही के समर्पित हृदय में प्रभु के पीछे विश्वासयोग्यता से चलना हुआ है, आज नहीं तो कल बहुत सी चीजों का उनके जीवन में आ जाना पक्का है।

नम्रता और मन की दीनता समय के साथ इनके प्रतिदिन के जीवन की विशेषता बन जाती है। प्रत्येक दिन के प्रति घंटे की घटनाओं में जैसे परमेश्वर की इच्छा आती है, उसके प्रति एक विनम्र स्वीकृति प्रकट होती है; परमेश्वर के हाथों में परिवर्तनशीलता या उनको भावते हुए सभी इच्छाओं के लिए कष्ट सहना; उत्तेजना के तहत मिठास; अशांति और हलचल के बीच शांति; दूसरों की इच्छाओं की पूर्ति करना (जहाँ कोई परस्पर विरोधी सिद्धांत शामिल नहीं है) और निरादर और अपमान के प्रति असंवेदनशीलता; चिंता या बैचेनी का न होना; चिंता और भय से छुटकारा - ये सभी, और इसी तरह के कई अन्य अनुग्रह हैं, जिन्हें वास्तव में उनके आंतरिक जीवन के स्वाभाविक बाहरी विकास में पाया जाता है, जिनका जीवन 'मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है'। `Z'16-183` R5913:1 (Hymn 294) आमीन

रात का गीत (17 मार्च)

रोमियो 12:9 …बुराई से घृणा करो; भलाई मे लगे रहो।

क्योंकि पवित्रता और पाप एक दूसरे के विपरीत हैं, इसलिए इनके प्रति हमारी भावनाओं को हमें अवश्य प्रेम और घृणा के भाव के द्वारा दर्शाना चाहिए। यदि हम धार्मिकता के प्रति प्रेम में ठण्डेपन की ओर बढ़ते हैं तो निश्चय ही पाप के प्रति घृणा में कमी हो गई है। इसलिए, आइये, हम खुद में पाप, स्वार्थ, अशुद्धता और हर प्रकार के बुरे मार्गों के लिए घृणा पैदा करें, ताकि हमें अपने हृदय में आत्मा के खुबसूरत अनुग्रहों को पैदा

करना आसान लगे। केवल हमारे मन में पुरानी बातें बीत गयी हैं और सब बातें नयी हो गयी हैं। वाकई में, यह बदलाव तब पूरा होगा जब हम आत्मिक जन बन जाएंगे। इस बीच में, यदि हमें पहले पुनरुथान में जगह पाने के योग्य के अन्दर गिने जाना है, तो यह आवश्यक है कि, जो प्रभु हमें बनाना चाहते हैं, हम वो सब बनने के लिए अपने मन की इच्छा, दिली तमन्ना का प्रदर्शन करें। ऐसा करने का बेहतर तरीका अपने विचारों और ह्रदय पर सख्त पहरा बैठाकर इनकी सुरक्षा करने के अलावा और कुछ भी नहीं हो सकता। Z'11-382 R4895:4 (Hymn 312) आमीन

रात का गीत (18 मार्च)

भजन संहिता **17:15** परन्तु मैं तो धर्मी होकर तेरे मुख का दर्शन करूंगा**,** जब मैं जागूँगा तब तेरे स्वरूप से सन्तुष्ट हूँगा।

हमारे धन्य प्रभु और सिर यानि प्रभु यीशु मसीह के स्वरुप में बनने के महत्व के बारे में कौन बिना यह महसूस किये सोच सकता है, की इस चरित्र की समानता को प्राप्त करना जीवन - भर का कार्य है! इस कार्य को एक दिन या एक वर्ष में पूरा नहीं किया जा सकता; बल्कि इसे करने के लिये पुरे जीवन को भक्ति के साथ समर्पित करना आवश्यक है; और दिन प्रतिदिन, यदि हम विश्वासी रहें तो, एक मात्रा में मसीही चरित्र में बढ़ोतरी और अनुग्रह में बढ़ोतरी को महसूस करते जायेंगे। यह पर्याप्त नहीं है कि हम सत्य को जानते हैं, या कि हम इसे धार्मिकता में धारण करने के लिए संतुष्ट हैं। हमें यह देखना होगा कि सत्य का चरित्र पर

अपना सच्चा और इसके उद्देश्य के अनुसार प्रभाव हो रहा है। और यदि सत्य को इस प्रकार से एक अच्छे और ईमानदार हृदय में ग्रहण किया जाये, तो हमारे पास प्रेरित पतरस का आश्वासन है की "हम कभी भी ठोकर नहीं खायेंगें", बल्कि उचित समय में राज्य में प्रवेश करने पायेंगे।

`Z'11-410` R4911:4 (Hymn 105) आमीन

रात का गीत (19 मार्च)

प्रेरितों के काम 20:31 ...मैंने तीन वर्ष तक रात दिन आंसू बहा बहा कर, हर एक को चितौनी देना न छोड़ा।

हम इफिसुस की कलीसिया के प्राचीनों को देखते हैं, जो की प्यारे प्रेरित पौलुस के साथ थे, और जो उनसे विदा ले रहे थे, और ये प्राचीन लोग प्रेरित पौलुस को यरूशलेम के लिए रवाना होने से पहले उन्हें विदाई देने आए थे, और वे प्रेरित पौलुस के इफिसुस से जाने से पहले उनकी सलाह लेने आये थे, जो की हमारे लिए एक विश्वसनीयता का और एक योग्य उदाहरण जिनकी हम नक़ल कर सकते हैं। उन्होंने इफिसुस की कलीसिया के प्राचीनों से कहा "और अब देखो, मैं जानता हूं, कि तुम सब जिनमें, मैं परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता फिरा, मेरा मुंह फिर न देखोगे" इसलिये मैं आज के दिन तुम से गवाही देकर कहता हूं, कि मैं सब के लहू से निर्दोष हूं" (प्रेरित पौलुस की एक भण्डारी के रूप में प्रभु के प्रति, निजी रूप से जो एक जिम्मेदारी थी, वह उनको ध्यान में थी, और जिसके बारे

में भविष्यद्वक्ता यहेजकल ने भी यहेजकल 33:7-9 वचन में जिक्र किया है) "क्योंकि मैं परमेश्वर की सारी मनसा को तुम्हें पूरी रीति से बताने से न झिझका"। प्रेरित पौलुस ने सत्य से कभी भी समझौता नहीं किया, उन्होंने सत्य के साथ कभी भी मनुष्यों के ज्ञान को, सिद्धान्तों को नहीं मिलाया। वे कभी भी यह नहीं सोचते थे कि, उनकी बातें यहूदियों या अन्यजातियों को सुनने में अच्छी लगे। उन्होंने सत्य को बिना किसी मिलावट के बांटा, फिर चाहे उन्हें ताड़नाएँ ही क्यों न सहनी पड़ी। जो भी मसीही शिक्षक, पौलुस के जैसी गवाही दे सकें, ऐसी परिस्थितयों में, वो वाकई में क्रूस के योद्धा हैं। Z'93-222 R1558:6 (Hymn 34) आमीन

रात का गीत (20 मार्च)

2 कुरिन्थियों 6:17,18 इसलिये प्रभु कहता है, कि उन के बीच में से निकलो और अलग रहो; और अशुद्ध वस्तु को मत छूओ, तो मैं तुम्हें ग्रहण करूंगा। और तुम्हारा पिता होऊंगा, और तुम मेरे बेटे और बेटियां होगे: यह सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर का वचन है॥

क्या वादा है! और परमेश्वर इन वचनों के द्वारा कितनी अच्छी सलाह दे रहे हैं -- हम जानते हैं, कि हम स्वाभाव से कितने अपवित्र और अपरिपूर्ण हैं। और हम परमेश्वर की नज़र में पड़ें, इसके योग्य भी नहीं हैं, इसके बावजूद भी हमें दिव्य बुलावा दिया गया है कि, हम उनके पुत्र बन सकें, और हमें वो आश्वासन देते हैं, कि वे हमें वे पिता जैसा प्रेम करते हैं। जिस प्रकार "धरती का पिता, अपने बच्चों के प्रति करुणा या दया दिखाता

है, उसी तरह परमेश्वर भी हम पर दया दिखाते हैं, यदि हम उनके प्रति पवित्र डर रखते हैं"। कितनी अच्छी है, यह सोच कि हम परमेश्वर के पुत्र हैं! जैसा चेलों ने यह एलान भी किया है, कि सिर्फ यहीं नहीं, की अगर हम उनके पुत्र हैं तो उनके वारिस भी हैं और प्रभु यीशु के साथ साँझा वारिस भी हैं। अगर हम उनके साथ कष्ट उठाएंगे तो उनके साथ महिमा भी पाएंगे। Z'15-233 R5739:5 (Hymn 189) आमीन

रात का गीत (21 मार्च)

यहोशू 1:2 ...सो अब तू उठ, कमर बान्ध, और इस सारी प्रजा समेत यरदन पार होकर उस देश को जा जिसे मैं उनको अर्थात इस्राएलियों को देता हूं।

यहाँ पर ये संकेत किया जा रहा है कि यहोशू मूसा की तरह विनम्र मनुष्य था, नम्र था और बजाए इसके कि वो नेतृत्व के अधिकार पर काबू करने का प्रयास करे, वो ये चाहता था कि उसे नेतृत्व करने की जिम्मेवारी खुद परमेश्वर दे और वे ही उसे नेतृत्व करने के लिए प्रोत्साहित करें। परमेश्वर के सभी लोगों के लिए ये ख़ुशी की बात होगी, यदि वे इसी तरह नम्र और अनिच्छुक (बिना इच्छा के) रहें। सभी को इस मामले में अपने हृदय की आलोचना करनी चाहिए, इरादों की आलोचना करनी चाहिए, और यदि वे खुद में महत्वकांक्षा की आत्मा पाएं तो उन्हें इससे जुड़े खतरों को याद रखना चाहिए। महत्वकांक्षा की आत्मा उनके खुद के लिए भी खतरनाक है और वैसे लोगों से जुड़े परमेश्वर के लोगों के लिए भी खतरनाक है। क्योंकि

याकूब 4:6 वचन में लिखा है - “परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है पर दीनों पर अनुग्रह करता है। परमेश्वर अभिमानियों, स्वार्थी, डींग हाँकने वालों और महत्वकांक्षी लोगों का विरोध करता है और दीनों पर अनुग्रह करते हैं। Z'07-281 R4061:1 (Hymn 229) आमीन

रात का गीत (22 मार्च)

यूहन्ना 1:5 और ज्योति अन्धकार में चमकती है…।

जो कोई भी परमेश्वर की सच्चाई की रोशनी को ग्रहण करता है, वह बुद्धिमानी के साथ आनन्दित रहता है, और आनन्दित रहकर, वह परमेश्वर की सच्चाई की रोशनी को कर्मों के द्वारा दूसरों के सामने चमकने देता है। न की परमेश्वर की सच्चाई की रोशनी को छुपाता है, क्योंकि तभी हम सच्चाई का प्रदर्शन साहस के साथ कर सकते हैं, और इस सच्चाई की रोशनी के प्रति आभार और गंभीरता दिखा सकते हैं -- यही गुण है जो परमेश्वर अभी खासकर उनमें खोज रहे हैं, जिनको उन्होंने बुलावा दिया है, की वे प्रभु यीशु के साथ उनके महिमा वाले राज्य में सहभागी होंगे, जो की, इस दुनिया के लोगों के बीच स्थापित होगा। इसलिए ये महत्वपूर्ण है की, हम उस सच्चाई की रोशनी को दूसरों के सामने प्रकट करें, और भले ही इसके प्रति हमें कष्ट भी उठाना पड़े, तो हमें आनन्दित और वफादार रहना है परमेश्वर और प्रभु यीशु के प्रति और उनके सन्देशे के प्रति। और हमारे पास प्रभु का वचन है की, जो कोई भी मनुष्यों के सामने मेरा इन्कार करेगा उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के

सामने इन्कार करूंगा। अगर हम परमेश्वर के प्रति वफ़ादारी नहीं दिखाते हैं, तो हम प्रभु यीशु मसीह की दुल्हिन नहीं बन सकते और प्रभु यीशु हमें स्वीकार नहीं करेंगे, ताकि हम उनके साथ उस महिमा वाले सिंहासन पर बैठ पाएं। Z'12-49 R4967:5 (Hymn 261) आमीन

रात का गीत (23 मार्च)

2 पतरस 1:12 इसलिये यद्यपि तुम ये बातें जानते हो, और जो सत्य वचन तुम्हें मिला है, उस में बने रहते हो, तौभी मैं तुम्हें इन बातों की सुधि दिलाने को सर्वदा तैयार रहूंगा।

सत्य में स्थापित होने का मतलब है, की हमने सत्य को पूरी तरह से पढ़ा है और उसको पूरी तरह से "व्यवस्था और गवाही के द्वारा" (यशायाह 8:20 वचन) साबित किया है, और इसके परिणामस्वरूप हम इसकी सत्यता के प्रति आश्वस्त हैं, ताकि हमारा विश्वास अडिग और दृढ़ हो: हम जानते हैं की, हमने किसपर विश्वास किया है; हमने परमेश्वर को चखा है और देखा है की वे अच्छे हैं; हमने उनकी संगती की मिठास में हिस्सा लिया है; हमने उनकी नम्रता, विश्वास और भक्ति की आत्मा में इस हद तक हिस्सा लिया है की, उनकी अद्भुत युगों की दिव्य योजना में परमेश्वर के अनुग्रह पर अनुग्रह की परिपूर्णता जो प्रगट हुई है, उसे हम आनंदपूर्वक महसूस कर पाते हैं और उसकी और हमारा मार्गदर्शन होता है; और हमको न केवल परमेश्वर की इस सुन्दर दिव्य योजना के विभिन्न गुणों को देखने की अनुमति मिली है, बल्कि हमें नियत समय की पूर्णता में इसके

शानदार परिणाम की पूर्ण सिद्धि के लिए इसके विभिन्न उपायों की आवश्यकता और तर्कशीलता को देखने की भी अनुमति दी गई है। यही है "वर्तमान सत्य को स्थापित करना"। यह वाकई में बहुत ही आशीषित अवस्था है, और ये सच्चाई अपने साथ शान्ति और आनंद लाती है जो ये दुनिया न दे सकती और न ले सकती है। Z'02-307 R3089:3 (Hymn 93) आमीन

रात का गीत (24 मार्च)

व्यवस्थाविवरण 8:7-11 क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे एक उत्तम देश में लिये जा रहा है, जो जल की नदियों का, और तराइयों और पहाड़ों से निकले हुए गहिरे गहिरे सोतों का देश है। फिर वह गेहूं, जौ, दाखलताओं, अंजीरों, और अनारों का देश है; और तेलवाले जैतून और मधु का भी देश है। उस देश में अन्न की महंगी न होगी, और न उस में तुझे किसी पदार्थ की घटी होगी ... इसलिये सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि अपने परमेश्वर यहोवा को भूलकर उसकी जो जो आज्ञा, नियम, और विधि, मैं आज तुझे सुनाता हूं उनका मानना छोड़ दे;

क्या उपदेश है! विश्वासयोग्यता के लिए क्या प्रोत्साहित करने वाली सुविधाएँ हैं! कौन होगा जो ऐसे परमेश्वर की आराधना और सेवा न करेगा! एक आत्मिक इस्राएली इस वचन को कितनी सुंदरता से अपने लिए लागू

कर सकता है! हमारे परमेश्वर ने हमें, उनसे वाचा बाँधे हुए लोगों को, इस दुनिया के वनवास में, कितनी अद्भुत रीती से आगे बढ़ाया है, और दिन-प्रतिदिन हमारी जरूरतों को पूरा किया है! परमेश्वर के प्यार भरे हाथ की ताड़ना ने कैसे हमारे पैरों को भटकने से रोक दिया; या यदि हम किसी भी समय दाहिने हाथ या बाईं ओर मुड़ गए, तो परमेश्वर का प्रेम हमें कैसे वापस खींचता है! और क्या परमेश्वर ने हमें उत्तम देश में नहीं लाया है जो जल की नदियों का, और तराइयों और पहाड़ों से निकले हुए गहिरे गहिरे सोतों का देश है, और तेलवाले जैतून और मधु का भी देश है, एक देश जहाँ हम रोटी खाते हैं, स्वर्ग की रोटी, बिना किसी घटी के? सचमुच, हमारे पास इस देश में किसी भी पदार्थ की कमी नहीं है। यदि पुराने इस्राएल के पास परमेश्वर के प्रति अपनी कृतज्ञता और प्रेम को साबित करने का कारण था, तो हमारे पास जो आत्मिक इस्राएल हैं, परमेश्वर के प्रति अपनी कृतज्ञता और प्रेम को साबित करने का और कितना अधिक कारण है! `Z'14-263` R5527:6 (Hymn 181) आमीन

रात का गीत (25 मार्च)

मत्ती 7:17 इसी प्रकार हर एक अच्छा पेड़ अच्छा फल लाता है और निकम्मा पेड़ बुरा फल लाता है।

प्रभु के सच्चे लोग उस प्रकार के हैं, जिनके जीवन के फल उनकी संगति में आनेवालों को पोषण और ताजगी देते हैं। दूसरी तरफ, ऐसे भी लोग होते हैं, जो काँटों की तरह, हमेशा बिखेरने वाले बीज़ की तरह होते हैं, जो

परेशानी का कारण बनते हैं -- झूठे उपदेशों, निन्दाओं, गलतियों के द्वारा। और कुछ ऐसे लोग होते हैं, जो काँटों की झाड़ियों के जैसे होंगे, और ताज़गी के फलों से भरे होने की जगह, वे लगातार अड़चन डालने, झुंझलाहट देने, परेशान करने, दुःख देने, जहर भरने, चोट पहुँचाने की ताक में रहेंगे, चाहे जिससे भी वे सम्पर्क में आये। प्रभु के लोगों को चाहिए कि, झूठे शिक्षकों, जो उन्हें गुमराह कर देंगे और उप-चरवाहों को जो ख़ुशी से अपना जीवन झूठे के लिए दे देंगे, इन दोनों में भेद करने में थोड़ी ही कठिनाई हो। एक समूह के लोग सदा चालबाज़ी करने वाले, गुप्त रूप से हानि पहुंचानेवाले और विनाश करने वाले होते हैं। दूसरे समूह के लोग मददगार, बनानेवाले, मज़बूत करने वाले और मेल करानेवाले होते हैं। Z'06-93 R3747:2 (Hymn 267) आमीन

रात का गीत (26 मार्च)

प्रेरितों के काम 1:8 परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।

मसीह की आत्मा आक्रमक आत्मा है। सुसमाचार का संदेशा सच्चे विश्वासी के सामने एक लक्ष्य, एक उद्देश्य रखता है, जो सर्वोच्च स्तर के एक मसीही को उत्साह से भर देता है। यह संदेशा एक आग की तरह बन जाता है, जिसके ताप के द्वारा हम दूसरों तक रोशनी पहुंचाते हैं। लिखा है,"आत्मा को न बुझाओ"। अभी के समय में जिसके भी पास सुनने के

कान हैं, उनके लिए यह संदेशा एक विशेष अनुग्रह है। हम परमेश्वर के लिए गहने खोज रहे हैं, उनके शाही याजक के लिए, उनके छोटी झुण्ड के लिए, उनके चुने हुओं के लिए -- ताकि ये सब स्पष्ट सच्चाई को पाकर प्रकाश पा सकें, और रोशनी में चलते हुए, अपने बुलाये जाने को और चुनाव को पक्का कर सकें, ताकि वे अपने उद्धारकर्ता के राज्य में उनके साथ साँझा वारिस बन सकें। Z'09-93 R4359:3 (Hymn 116) आमीन

रात का गीत (27 मार्च)

यहोशू 1:8 व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रहना।

व्यवस्था की इस पुस्तक पर दिन रात ध्यान दिए रहने का मतलब, बिलकुल भी साधारण भाषा में यह नहीं लेना है कि - हमें दिन - रात वचनों के बारे में सोचने के अलावा कुछ और करना ही नहीं है। प्रभु के कहने का मतलब हमें यह समझना है की - जीवन के सभी मामलों के संबंध में, हमेशा हमारे मन में हमें यह बात याद रखनी चाहिये, की हम प्रभु के हैं, और प्रभु ही सब मामलों में हमारे मार्गदर्शक और निर्देशक हैं, और यह याद रखना चाहिए की कोई मामूली बात भी जो हमारे जीवन और हमारे हितों से संबंधित होगी, दिन हो या रात, हमें प्रभु की इच्छा का यथोचित सम्मान करते हुए ही उसपर विचार करना चाहिए। **`Z'07-284` R4062:4 (Hymn 307) आमीन**

रात का गीत (28 मार्च)

मत्ती 16:19 और जो कुछ तू पृथ्वी पर बान्धेगा, वह स्वर्ग में बन्धेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा।

इस वचन में बाँधने और खोलने से सम्बन्धित पतरस का जो अधिकार बताया गया है, यह उन दिनों में मना करने और अनुमति देने के लिये आमतौर पर उपयोग में लाया जानेवाला शब्द था। एक लेखक के कहा है, "रेबोनिक केनोन की व्यवस्था में अन्य कोई शब्द इतने निरंतर उपयोग में नहीं थे, जितना की बाँधना और खोलना। ये शब्द रेबोनिक कार्यालय के वैधानिक और न्यायिक सामर्थ्य को दर्शाते थे। बाँधने का मतलब है - किसी कार्य को करने की अनुमति और खोलने का मतलब है - किसी कार्य के लिये मना करना। यह अधिकार सभी प्रेरितों को दिया गया था (मत्ती 18:18,19), और प्रेरितों के इसी अधिकार पर हमारे विश्वास के कारण, दिव्य इच्छा से सम्बन्धित प्रेरितों ने जो भी एकदम सही प्रस्तुत किया है, हम उसको कसकर पकडे रहते हैं, और प्रेरितों के बाद प्रभु के जो भी चेले आये, उनमें से किसी की भी गवाही को उसके समान महत्त्व और प्रभाव नहीं देते हैं। हमें केवल वही मानना है जो पिता के वचन में लिखा है। पिता के इन वचनों को लिखने का अधिकार केवल प्रेरितों को मिला था। प्रेरितों के द्वारा जो लिखाया गया है, वो हमारे लिये परमेश्वर की आज्ञाएँ हैं। उन्हें छोड़कर और किसी को भी क्या करना है और क्या नहीं करना है, यह बताने का अधिकार प्रभु यीशु ने नहीं दिया था। हमें केवल प्रेरितों

के लिये आश्वस्त किया गया है कि वे दिव्य निगरानी के अंदर थे-- उन्होंने जिस बात के लिए मना किया या अनुमति दी--वो सब दिव्य मार्गदर्शन और अनुमति के अंदर है। **`Z'06-174` R3789:6 (Hymn 227) आमीन**

रात का गीत (29 मार्च)

निर्गमन 16:15 यह देखकर इस्राएली, जो न जानते थे कि यह क्या वस्तु है, सो आपस में कहने लगे यह तो मन्ना है। तब मूसा ने उन से कहा, यह तो वही भोजन वस्तु है जिसे यहोवा तुम्हें खाने के लिये देता है।

परमेश्वर से मन्ना की आपूर्ति मसीह में अनुग्रह की आपूर्ति का एक सुंदर चित्र है: इस मन्ना को शारीरिक इस्राएलियों को प्रतिदिन इकठ्ठा करने की जरुरत थी; इस मन्ना को शारीरिक इस्राएली दूसरे दिन के लिए नहीं रख सकते थे। इससे हमें यह पाठ उन लोगों के लिए प्रतीत होता है कि, जो लोग परमेश्वर के अनुग्रह और सत्य को बहुत अधिक इकठ्ठा करते हैं, उन्हें भी परमेश्वर के इस अनुग्रह और सत्य को दूसरों के साथ बांटना भी है। परमेश्वर के इस अनुग्रह और सत्य को इस नज़रिये से नहीं दिया जाता है कि, हमारे अन्दर आत्मिक रूप से घमण्ड आ जाए। हमने इसे कितनी बार देखा है कि, इसे उदाहरण के द्वारा समझा जा सकता है: जो लोग केवल वचनों की पढाई अपने लिए करते हैं, और जो दूसरे भाइयों के साथ इन वचनों को और परमेश्वर की आशीषों को नहीं बांटते हैं, वे इस लम्बे समय तक इस दौड़ में नहीं होते हैं जितना कि हम उम्मीद करते हैं। हमारे द्वारा मन्ना को इकठ्ठा करना प्रतिदिन का काम है: स्वर्गीय

रोटी का आत्मिक भोजन करना हमारे लिए एक निरन्तर विशेषाधिकार है, इस आत्मिक भोजन के बिना हम जीवन की इस यात्रा में चलने की सामर्थ नहीं पा सकते; लेकिन इस आत्मिक भोजन के साथ हम प्रभु में मजबूत होते जाते है, और दूसरों पर परमेश्वर के इन अनुग्रहों को बाँट सकते हैं, और इस तरह दूसरों की सहायता करने की अनुमति दे सकते हैं। Z'07-186 R4012:5 (Hymn 226) आमीन

रात का गीत (30 मार्च)

प्रकाशितवाक्य 15:3 वे परमेश्वर के दास मूसा का गीत, और मेम्ने का गीत गा गाकर कहते थे, "हे स्र्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, तेरे कार्य बड़े, और अद्भुत हैं, हे युग-युग के राजा, तेरी चाल ठीक और सच्ची है"।

जितना अधिक हम हमारी जाति के विरुद्ध मौत की सजा के पीछे के दिव्य न्याय और धार्मिकता की सराहना करते हैं, उतना ही अधिक हम हमारे प्रति परमेश्वर के प्रेम और करुणा की सराहना कर पायेंगे, और इस बात से आनन्दित होंगे की परमेश्वर नहीं चाहते थे की कोई भी नष्ट हो, और इसीलिये उन्होंने ऐसा प्रावधान किया जो काफी चौड़ा, काफी ऊँचा, काफी गहरा है, ताकि सब लोग परमेश्वर की ओर फिर सकें और जीवन पा सकें - सबके पास अनन्त जीवन हो। करुणा का यह प्रावधान पाप को अनदेखा नहीं कर सकता और न ही पापी को इसे अनदेखा करने की अनुमति दे सकता है। यह आवश्यक है कि छुटकारे पाये हुये को मालूम होना चाहिए और इसकी क़द्र होनी चाहिए की, वो पाप में गिरी हुई अवस्था

में था, उसका मृत्यदंड न्यायपूर्ण था, और यह की उसका छुटकारा या सही हालत में वापस आना पूरी तरह से दिव्य करुणा का प्रतिफल है। जब तक वे यह सबक नहीं सीखते, वे कभी भी दिव्य प्रबंधों की सराहना नहीं कर सकते और न ही उन शर्तों की क़द्र कर सकते हैं केवल जिनपर परमेश्वर उन्हें अनन्त जीवन प्रदान करेंगें - ये अनिवार्य शर्तें हैं - परमेश्वर के अनुग्रह और क्षमा को स्वीकार करना और उनका परमेश्वर और परमेश्वर के धार्मिकता के सिद्धांतों के प्रति आज्ञाकारी रहना। `Z'06-62` R3729:5 (Hymn 79) आमीन

रात का गीत (31 मार्च)

इब्रानियों 4:12 क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है…।

हर मामले में यह परमेश्वर का वचन है जो गड़बड़ी, कोलाहल का कारण बना है। चाहे यह वचन भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से भेजा गया हो या इस युग के प्रेरितों और सुधारकों के माध्यम से भेजा गया हो, यह परमेश्वर हैं जो स्वर्ग से बोलते हैं - और उनका वचन जीवित और प्रबल है, जो किसी भी मानवीय संदेशे से परे खोजता है। परमेश्वर का वचन अलग करनेवाला है, अंतर करने वाला है, और जो सत्य के भूखे हैं उनको ढूंढ़कर, दूसरों को उनसे अलग कर देगा; परमेश्वर का वचन ज्योति है, जिसके बारे में प्रेरित ने घोषणा की है, जो सब कुछ को प्रगट करता है वह ज्योति है। इस ज्योति, सत्य के प्रति लोगों का नज़रिया, उनके सभी व्यवसायों

से बेहतर, यह प्रदर्शित करता है कि वे ज्योति के हैं या अन्धकार के। हमारी निर्णय लेने की अपरिपूर्णता के कारण, हो सकता है कि कुछ लोगों को हम ज्योति की संतान मान लें, पर वास्तव में वे ज्योति के न हों, और कुछ लोगों को हम अन्धकार की संतान होने का अनुमान लगा सकते हैं, पर वे वास्तव में हृदय से अलग हों। परमेश्वर जानते हैं जो उनके हैं; वे दर्शाते हैं कि, कौन उनकी तरफ है और कौन अन्धकार की तरफ है; आइए हम संतुष्ट रहें और सत्य के हँसुए को कटनी के कार्य में अलग करने का काम करने दें, और आइये हम आत्म-इच्छुक और मनमौजी न हों, बल्कि प्रभु पर इन्तज़ार करें। आइए हम परमेश्वर पर धीरज के साथ इन्तज़ार करें, उनकी दिव्य बुद्धि और दिव्य प्रेम पर जो अलग करती है - हम जानते हैं कि उनकी योजना अंत में सबसे अच्छी है। Z'06-295 R3860:6 (Hymn 81) आमीन